धर्म-परिवर्तन
एवं धर्मांतरितोंका शुद्धिकरण

अनुक्रमणिका

अध्याय १ : धर्म-परिवर्तनकी समस्या ६
१. अर्थ एवं समानार्थी शब्द ६
२. धर्म-परिवर्तनके सामान्य प्रकार ६
३. हिंदुस्थानमें धर्म-परिवर्तनका इतिहास ६
४. हिंदुओंका धर्म-परिवर्तन करनेके पीछे अहिंदुओंका उद्देश्य ! १३
५. हिंदुओंके धर्म-परिवर्तनकी व्याप्ति १५
६. धर्मांतरणके कारणभूत हिंदुओंके दोष एवं अन्य कारण २२
७. धर्म-परिवर्तनके पश्चात् हिंदुओकी दयनीय स्थितिके कुछ उदाहरण २४
८. धर्म-परिवर्तनके दुष्परिणाम २४
९. आध्यात्मिक दृष्टिसे धर्म-परिवर्तन करना अनुचित ! ३०
१०. संविधानका २५ वां अनुच्छेद और धर्म-परिवर्तन ३१
११. हिंदु समाजको आवाहन ३३
१२. हिंदुत्ववादी संगठनोंको आवाहन ३४
१३. धर्म-परिवर्तन रोकनेके उपाय ३५
१४. धर्माधिष्ठित हिंदुराष्ट्रमें हिंदुओंके धर्म-परिवर्तनपर प्रतिबंध रहेगा ! ३९
– धर्म-परिवर्तनका समर्थन करनेवाले अनुचित विचारों एवं आलोचनाओंका खंडन ४०

अध्याय २ : धर्मांतरितोंका शुद्धीकरण ४१
१. व्याख्या ४१
२. शुद्धीकरणके विषयमें धर्मशास्त्रका क्या कथन है ? ४१
३. शुद्धीकरणकी विविध पद्धतियां एवं विधियां ४३
४. धर्मांतरण कर हिंदु बननेवालोंके लिए साधनामार्ग ४४
५. शुद्धीकरणके विषयमें स्वामी विवेकानंदद्वारा शंकासमाधान ! ४४
६. हिंदु समाजको आवाहन ४५

मनोगत

धर्म-परिवर्तनकी समस्या अर्थात् हिंदुस्थान एवं हिंदु धर्मपर अनेक सदियोंसे परधर्मियोंद्वारा होनेवाला धार्मिक आक्रमण ! इतिहासमें अरबीयोंसे लेकर अंग्रेजोंतक अनेक विदेशियोंने हिंदुस्थानपर आक्रमण किए । साम्राज्य विस्तारके साथ ही स्वधर्मका प्रसार, यही इन सभी आक्रमणोंका सारांश था । आज भी इन विदेशियोंके वंशज यही ध्येय सामने रखकर हिंदुस्तानमें नियोजनबद्धरूपसे कार्यरत हैं । मुसलमान 'लव जिहाद'के माध्यमसे राष्ट्रको खोखला बना रहे हैं, तो एक ओर ईसाई धर्म-परिवर्तनके द्वारा हिंदु धर्मको खोखला बना रहे हैं तथा धर्मशिक्षा न मिलनेके कारण धर्माभिमानशून्य हिंदु समाज बडी मात्रामें इसका बली बन रहा है । श्रीमद्भगवद्गीतामें बताया गया है कि 'स्व धर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।', अर्थात् 'स्वधर्मका पालन करते समय यदि मृत्यु मिली, तब भी परधर्म स्वीकारनेकी अपेक्षा यह मृत्यु ही श्रेष्ठ है ।' हिंदुओंको यह ध्यानमें रखना चाहिए कि 'जिस प्रकार पानीमें रहनेवाली मछली घीमें गई, फिर भी उसका मरण निश्चित है, उसी प्रकार स्वधर्म छोडकर अन्य धर्ममें जाना भी मृत्युके निकट जानेके समान ही है' हिंदु समाजको धर्म-परिवर्तन करनेका अहिंदुओंका सुनियोजित षड्यंत्र, उसके लिए उन्हें विदेशसे मिलनेवाली आर्थिक सहायता, धर्म-परिवर्तनका सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरपर होनेवाला परिणाम इत्यादिके विषयमें इस ग्रंथमें विस्तृत जानकारी दी गई है । धर्म-परिवर्तनका सुनियंत्रित षड्यंत्र रोकनेके लिए हिंदु समाज, हिंदुत्ववादी संगठन एवं केंद्र शासनको क्या उपाययोजना करनी चाहिए, यह भी इस ग्रंथमें बताया गया है । 'शुद्धीकरण' प्रक्रियाके विषयमें स्वतंत्र प्रकरण इस ग्रंथमें अंतर्भूत किया गया है । कुंभकर्ण वर्षमें छः मास ही सोता था; परंतु हिंदु समाजरूपी कुंभकर्ण धर्म-परिवर्तनकी समस्याके विषयमें सैकडों वर्षोंसे सोया हुआ ही है । यह ग्रंथ पढकर धर्म-परिवर्तनकी समस्याके विषयमें हिंदु समाज जाग्रत हो तथा धर्म-परिवर्तनके विदेशी आक्रमणका विरोध कर सके, यही ईश्वरचरणोंमें प्रार्थना !